जन आस्था का केन्द्र–मालासी

शेखावाटी अंचल के चूरू जिले में स्थित है ग्राम 'मालासी'। इस गाँव में एक प्राचीन कुआं है। इस कुएं की 'चाठ' की गत छह–सात सौ वर्षों से पूजा होती आ रही है। शेखावाटी बोली में कुएं के पास के पत्थर को 'चाठ' कहा जाता है। 'चाठ' पर श्रद्धालु तेल और कुछ सामग्री चढ़ाकर श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हो जाते हैं।

जन–जन की आस्था के केन्द्र बने 'मालासी' के साथ अनेक जनश्रुतियाँ जुड़ी हुई हैं। इसके अनुसार 'मालासी' के निकट के गाँव खिरोड़ के एक जाट परिवार में मालाराम नामक बालक का जन्म हुआ। बालक बचपन से बड़ा ही परोपकारी था। तन्त्र विद्या का उसने ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मालाराम जब बड़ा हुआ तो उसका विवाह 'मालासी' गाँव के एक जाट परिवार में कर दिया गया। एक बार उन्होंने 'मालासी' गांव के कुछ लोगों से कहा कि आप मेरे नाम से गाँव में एक कुआँ बनवाएं। गांव के लोगों ने उसकी बात को अनुसनी कर दी। कुछ समय बाद गाँव में कुए की आवश्यकता हुई, अतः कुआ खुदवाना शुरु कर दिया गया। कुए का निर्माण जब अन्तिम चरण में था तो मालाराम फिर गाँव में आए। उन्होंने अपनी बात को फिर से दोहराया। गाँव के लोगों ने इस बार भी उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कहते हैं कि इस पर नाराज मालाराम कुंए में कूद पड़े। बहुत प्रयास के बाद जब उन्हें कुएं से बाहर निकाला गया तो वे उन्हें जीवित पाकर लोग आश्चर्य में पड़ गए।

कुएं से बाहर निकाले जाने के बाद उन्होंने तंत्र विद्या व योग साधना से अभिमंत्रित कोई चीज 'चाठ' के नीचे गाड़ दी और वापस अपने गाँव चले गए। कहते हैं कि इस बीच उनकी साली ने एक पुत्र को जन्म दिया। यह बालक कई दिनों तक रोता रहा। इस पर मालाराम जी ने कुएं की 'चाठ' के समक्ष बच्चे को धोक दिलाने की सलाह दी। बच्चें को चाठ के समक्ष जब धोक दिलाई गई तो बच्चे ने तुरन्त रोना बन्द कर दिया। तभी से इस स्थान पर नवजात शिशुओं की 'जात' की परम्परा शुरु हुई। मालाराम जी ने अनेक जन–कल्याणकारी कार्य किए जिससे उनकी कीर्ति दूर–दूर तक फेल गई। उनके लोक हितकारी कार्यो व तान्त्रिक सिद्धियों में निपुणता के कारण लोग उन्हें अवतारी पुरुष मानकर लोकदेवता की तरह उनकी पूजा करने लगे। इसके बाद 'मालासी' के प्रति लोगों में इतनी गहरी श्रद्धा है कि शेखावाटी अंचल में जन्मा हर कोई होश सम्भालने से पहले ही अपने परिजनों के साथ जात देने पहुँच जाता है। इस क्षेत्र के कोलकाता, मुम्बई, गुवाहाटी, बैंगलोर व देश के अन्य भागों में रहने वाले परिवार भी अपने घर में जन्में बच्चे को यहां माथा टेकने के लिए जरुर लाते हैं। शेखावाटी के गांव के प्रति कांकड़ (सीमा से) मालासी के मेणतिये भैंरु की जात रविवार को लगती है।

साभार–डमरु की आवाज सूनो ग्रन्थ स्मारिका 2004